Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

बदलते मूल्य और धूमिल की कविता

डॉ राकेश चंद्र
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, जे वी जैन कालेज, सहारनपुर , भारत।

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 48-52
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 29 Sep 2023

समकालीन कविता में सुदामा पांडे 'धूमिल' राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, विसंगतियों के विरूद्ध रचना करने वाले रचनाकार हैं। इन्होंने समकालीन काव्यान्दोलन को कथ्य और शिल्प के धरातल पर परम्परागत और रूढ़िगत रचना प्रक्रिया का विरोध किया तथा निष्ठा, विवेक और औचित्यपूर्ण काव्य रचना की। यह स्वाभाविक बात है कि परम्परागत विरोध के लिए पूर्ववर्ती पीढ़ी को कुछ स्तरों पर नकारकर, नये–नये आयाम स्थापित करने पड़ते हैं इस पूरी प्रक्रिया में विरोध करने वाले को अन्तर्विरोधों का भी शिकार होना पड़ता है। इस तथ्य को भी नकारा नहीं सकता कि इन अन्तर्विरोधों को ऐतिहासिक पीठिका द्वारा ही मूल्यांकित कर सकते हैं। जैसे धूमिल के ही अनुसार

''छायावाद के कवि शब्दों को तोल कर रखते थे
प्रयोगवाद के कवि शब्दों को टटोल कर रखते थे।
नयी कविता के कवि शब्दों को गोल कर रखते थे
सन् साठ के बाद के कवि शब्दों को खोल कर रखते थे।''[1]

अलग–अलग कविता रचना के पड़ावों पर कवि ने तीक्ष्ण दृष्टि डाली है जो वास्तव में कविता के हर एक चरण की विशेषता को व्याख्यायित करती है। सन् साठ के बाद की कविता का विन्यास खुलकर सामने आने के बावजूद भी यह कविता समीक्षकों के लिए दुर्बोध एवं दुरूह बनी हुई है। सम्भवतः इसका कारण समीक्षकों का बंधी–बंधायी परिपाटी पर चलना है। धूमिल की कविता रचना को समझने के लिए आवश्यकता है–छिद्रान्वेषण, सत्यान्वेषण तथा सौन्दर्यान्वेषण के द्वारा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में प्रवेश करने की डॉ0 विश्वम्भर नाथ उपाध्याय की भी यही मान्यता है।

''धूमिल ने नई कविता की अन्तर्मुखता और काव्य भाषा तोड़ने में मदद की है। उनकी कविता का एक विशिष्ट व्यक्तित्व भी बन गया है लेकिन संसद से सडक तक में धूमिल की कविता एक विकास बिन्दु पर पहुँचकर रूक गई जान पड़ती है। अपने आविष्कारों की पुनरावृत्ति इस ठहराव का नतीजा है।''[2]

धूमिल ने साठोत्तरी कविता को नयापन दिया और अन्तर्मुखता को तोड़कर कविता को आगे बढ़ाया। धूमिल की कविता की सम्प्रेषणीयता अलग ही अन्दाज से युक्त है। धूमिल ने अपनी व्यापक अनुभूतियों को सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ सचेत होकर रचना प्रक्रिया की है। वे व्यापक मानवीय संवेदना से युक्त रचनाकार हैं जिन्होंने कटु सामाजिक अनुभवों को अपने काव्य के द्वारा सम्प्रेषित किया है। उन्होंने निजी धरातल पर जो कुछ झेला वो उनकी कविता का विषय और कथ्य है। जैसे–

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

''उसके लिये कविता सिर्फ शब्दों की बिसात नहीं
वाणी की आँख है
बारिश में भीगकर आहदित कवि
नंगे सिर घूमता है कीच भरे रास्तों पर।''[3]

वास्तव में कवि के लिये कविता सिर्फ शब्दों का जाल ही नहीं अपितु वो व्यापक धरातल पर सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक अन्तर्विरोधो को युग की समस्याओं को अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से देखता है और सच को सामने लाता है। कवि अन्तर्मुखी होकर अपने युग की समस्याओं, अन्तर्विरोधों तथा घात–प्रतिघातों से मुँह नहीं फेर सकता अपितु वो वाणी की आँख के द्वारा सचेत है और अपने कवि होने के दायित्व का निर्वाह कर रहा है। जैसे धूमिल के ही शब्दों में–

''मगर मत भूलों कवि एक खौलता हुआ
आंसू है रक्त–सिक्त उत्तप्त
जिससे तुम अपनी ठिठुरी हुयी करूणा
सेंक सकते हो।।''[4]

अनेक अवसरों पर धूमिल की कविता भावात्मक, व्यथित और विचारात्मकता से जुड़ी हुई है। कवि पीड़ित की व्यथा को अपनाना चाहता है जिनसे उसकी आत्मा पसीजती है। सामाजिक अन्तर्विरोध कवि की भावनाओं, और संवेदनाओं को मथते हैं। वह खौलता आँसू या रक्त–सिक्त उत्तप्त शब्द कवि का लाचार लोगों की मनः स्थिति को समझना और उनकी संवेदनाओं से जुड़ना दर्शाते हैं ये आँसू सिर्फ धूमिल के ही नहीं हैं अपितु, पीड़ित समुदाय के भी हैं। यही संवेदना समकालीन कविता का सौन्दर्य है। धूमिल की कविता जनक्रान्ति को लाने वाले अभियान का हिस्सा है। जैसे–

''अनुभव के नये–नये पृष्ठों पर
भाषा के समर्थन में बूंदे गिरती हैं
जैसे सामूहिक हस्ताक्षर अभियान में
आसमान दस्तखत।
और कविता– कविता से भीगती है
तृप्त और कृतज्ञ जैसे पानी.....
पानी से भीगती है समरस और शान्त।''[5]

काव्य रचना का मार्ग अनुभव से होकर गुजरता है जीवन में मिलने वाले व्यापक अनुभव ही उन सब चीजों का निर्माण करते हैं जो भविष्य में इतिहास बनने वाला है। रचनाकार को निजी या सार्वजनिक बातें अनुभव का संसार केवल तभी दे सकती हैं जब रचनाकार संकल्पयुक्त हो, उसका विवेक जाग्रत हो या वो अपने कर्तव्यों को लेकर निष्ठावान हो तभी वो भाषा को समृद्ध कर सकता है।

ऐसी प्रामाणिक चेतना से युक्त होकर ही रचनाकार जन जीवन को अभिव्यक्ति दे सकता है। बिना अनुभव प्राप्त किये श्रेष्ठ काव्य सृजन अप्रासांगिक ही रहता है । ऐसे में बिना जीवन प्रक्रिया को जाने रचना प्रक्रिया भी अप्रासांगिक लगती है।

''शब्द किस तरह
कविता बनते हैं
इसे देखा
अक्षरों के बीच गिरे हुए
आदमी को पढ़ो
क्या तुमने सुना है कि यह
लोहे की आवाज है या मिट्टी में गिरे हुए खून का रंग।''[6]

रचना प्रक्रिया तभी सार्थक हो सकती है जब अक्षरों के बीच गिरे हुए आदमी को पढा जाये। उसकी व्यथा को अपनाया जाये। यदि किसी रचना में ये ना हो तो वो सृजन मानव की व्यथाओं को नहीं अपना सकता उसमें मानव की पहचान की सामर्थ्य नहीं है। साथ ही वो रचना भी प्रासंगिक नहीं हो सकती। धूमिल की कविता संवेदना से युक्त प्रासंगिक कविता है। धूमिल स्वयं लोहे की आवाज है। जो पूँजीवादी नीतियों के विरोध में है जहाँ बडे–बडे पूँजीपति निम्न वर्ग का हर प्रकार से शोषण करते हैं। आज जबकि धूमिल इस दुनिया में नहीं हैं, तब भी उनके शब्द लोहे के शब्दों की भाँति आज भी समाज में प्रतिध्वनित हो रहे हैं। धूमिल का काव्य संसार शोषकों के प्रति सदैव संघर्षमयी रहा है और इनकी काव्यमय पंक्तियाँ सदैव समकालीन कविता के इतिहास में लोहे की भांति संघर्षमय विद्रोहात्मक आवाज के रूप में विद्यमान रहेंगी। पूंजीवादी ताकतों के लिए धूमिल की रचना प्रक्रिया लोहे से बना ताना–बाना है। इनकी कविता अक्षरों के बीच पीड़ित व्यक्ति की व्यथा को तमाम् अन्तर्विरोधों, द्वन्द्वों और विवशताओं के साथ चित्रित करती है और आत्मसात करती है–

''मेरे पड़ौस की चुनमुन गोरैया
अपना घोंसला लोहे की जालियों से बुनने लगी है और मेरी छप्पर का।
एक नन्हा तिनका जंगल की शाख होने का सपना।
देख रहा है।[7]

धूमिल की कविता आस्थाओं को भी संजोती है। चुनमुन चिरैया जैसा निरीह पक्षी जब अपना घोंसला लोहे की जालियों से बना सकता है तब निम्न वर्ग के व्यक्ति अपना घोंसला (व्यक्तिगत निर्माण) लोहे की जालियों (शस्त्रों से लेस) से क्यों नहीं कर सकते। इसके अभाव में वे नारकीय जीवन जीने को विवश रहेंगे। धूमिल की दृष्टि के हिसाब से इन पूँजीवादी जंगल में ज्वालाएँ कभी तो ज्वालामुखी बनकर निम्न वर्ग को जगायेंगी। ये ही धूमिल की चेतना और रचना प्रक्रिया है। जहाँ पर पूंजीवादी शक्तियाँ धूमिल के मन पर आघात करती हैं और कवि प्रतिबद्ध होकर जन क्रान्ति की ओर बढ़ता है और जहाँ पर कवि की भाषा प्रतीकात्मक हो रही है। धूमिल की कविता में मात्र आक्रोश ही नहीं है अपितु वो मार्ग भी है जो सार्थक परिणिति के लिए आवश्यक भी है। इनकी कविता को समझने के लिए सूक्ष्माअन्वेषिणी दृष्टि की आवश्यकता है न कि पूर्वाग्रह की तभी वे कहते हैं–

''उन्होंने किसी चीज को
सही जगह नहीं रहने दिया है।
न संज्ञा
न सर्वनाम

न विशेषण

एक समूचा और सही वाक्य टूटकर

बिखर गया है।''[8]

पूर्वाग्रहित परम्परा, व्याकरणिक प्रतिमान द्वारा एक समूचे और सही वाक्य को टुकडे–टुकडे करके बिखेर दिया जाता है जो स्पष्ट तौर पर दुराग्रह ही है। जो आलोचक धूमिल की व्याकरणिक निरपेक्षता को नहीं समझते और उसे व्याकरण में कस कर अप्रासंगिक मानते हैं तथा सार्थक रचनाओं से भरे संसार को रौंद देते हैं, वो केवल पूर्वाग्रह से युक्त होकर ही समीक्षा करते हैं। धूमिल की कविता को जीवन प्रक्रिया से काटकर मूल्यांकन करते हैं। समीक्षा को लेकर ये अन्तर्विरोध भी धूमिल की कविता में प्रत्यक्ष है–

''इसे बांद्धो, उसे काट्टो, हियाँ ठोक्को, वहाँ पीट्टो

घिश्शा दो, आइशा चमकायो, जूते को ऐना बनाओ।।[9]

समीक्षक जब कवियों की सार्थक रचना पर आरोप लगाकर पूर्वाग्रह से युक्त भूमिका में आते हैं और कवियों को उनकी रचनाओं को चमकाने, ऐना बनाने, घिश्शाने, ठोकने, पीटने को कहते हैं तो उसी का अपनी रचना के माध्यम से कवि ने वर्णन किया है। धूमिल जैसे कवि अपनी रचना की सार्थकता के सम्मुख ऐसे आदेशों को कभी भी स्वीकार नहीं करते।

डा0 हुकुमचन्द राजपाल के शब्दों में– ''धूमिल ने कविता में कुछ ऐसी शुरूआते की है जो अब प्रत्येक कवि का मूल आधार बन गया है। आज नई कविता का अपना अन्दाज धूमिलीय है।।''[10]

वस्तुत धूमिल की कविता व्याकरण के नियमों की अपेक्षा जन जीवन से सम्बद्ध है। इनके रचनाओं का केन्द्रीय विषय आम आदमी है। धूमिल की रचना प्रक्रिया पूर्णतया सामाजिक प्रतिबद्धता से जुड़ी है। रचनाकार की सूक्ष्म अन्वेषण दृष्टि ही है जो उसकी सामाजिक प्रतिबद्धता का कारण है। प्रत्येक रचनाकार अपने समाज की संवेदनाओं, भावों की ईमानदारी से प्रस्तुति करता है तभी उसको चेतनाशील और सामाजिक प्रतिबद्धता का रचनाकार माना जाता है। यही विशेषता धूमिल के काव्य की भी है। जो अपनी प्रतिबद्धता में वर्ग विरोधी, संघर्ष विरोधी एवं दूषित अन्तर्विरोधी जीवन पद्धतियों पर अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यंग्य करता है ताकि वो अपने सोये रूप से बाहर आकर अपने अस्तित्व की तलाश कर सकें। अपनी विवशता से बाहर आकर अपनी शक्ति को प्राप्त कर सकें। जैसे

''बौने पद् चिन्हों से अंकित

उखड़े हुए मील के पथ्थर

मोड़–मोड़ पर दीख रहे हैं

राहों के उदास ब्रह्म मुख

नेति–नेति कह

चीख रहे हैं।[11]

मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी समुदाय प्राप्त सुख–सुविधाओं में खोकर अपने विराट स्वरूप को भुलाकर बौना बन चुका है। वह वैयक्तिक स्वार्थों के कारण तिरस्कृत लोगों से सच्ची प्रतिबद्धता के धरातल पर तिलांजलि ले चुका है। इस बौनेपन का कारण उसका अस्तित्व हीन अन्तर्विरोध है। बाह्य धरातल पर वह नेति–नेति कहकर अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है।

भीतरी धरातल पर वह उनसे परायीकृत होकर व्यवस्था पंथी बन चुका है। यह ''बौनापन' इसलिए है क्योंकि इनका संकल्प निम्न वर्ग को दिशाहीन करना हैं ये हमारे समाज के ब्रह्म हैं और निम्न वर्ग से परायीकृत हो चुके हैं।

धूमिल की कविता समाज और राजनीति में व्याप्त अन्तर्विरोधों, भ्रष्टाचार, अवसरवादिता के विरूद्ध क्रान्ति के पक्षधर है। इनकी रचना प्रक्रिया इस बात की पुष्टि करती है। आवश्यकता धूमिल की रचना प्रक्रिया में निहित गहरे ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सन्दर्भों को समझने की है। वस्तुतः धूमिल सामाजिक प्रतिबद्धता के कवि हैं। जहाँ पर वो निम्न वर्ग के प्रति प्रतिबद्ध हैं वहीं उनकी अन्तर्विरोधी दूषित वर्ग विरोधी नीतियों में सुधार की इच्छा रखते हैं। साथ ही उन्हें मानव मुक्ति के जीवन पथ पर भी लक्षयोन्मुख करने की कोशिश करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. धूमिल, कल सुनना मुझे, युग बोध प्रकाशन 1977, पृ0 1
2. 'विश्वम्भर नाथ उपाध्याय, समकालीन सिद्धान्त और साहित्य, दिल्ली
मेरूमिलन 1976, पृ0 189
3. धूमिल, कल सुनना मुझे, युग बोध प्रकाशन 1977, पृ0 44
4. धूमिल, कल सुनना मुझे, पृ0 63, वर्ष 1972, राजकमल प्रकाशन
5. वहीं, पृ0 44
6. वहीं, पृष्ठ 80
7. वहीं पृष्ट 40
8. धूमिल, संसद से सडक तक, राजकमल 1972, पृ0 109
9. वहीं, पृ0 38
10. हुकुम चन्द राजपाल, समकालीन बोध और धूमिल का काव्य दिल्ली कोणार्क प्रकाशन 1980, पृ0 64
11. धूमिल, कल सुनना मुझे, युग बोध प्रकाशन 1977, पृ0 49